

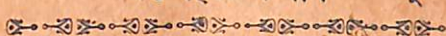
कर कहो जी। अर्जुन की विनय मान श्रीकृष्ण भगवान जी बोलते भये।

श्रीभगवानोवाच

हे अर्जुन! संसार की कामना के सभी कार्य कर्म्म त्याग कर मेरी शरण में आवना ऐसा जो प्राणी



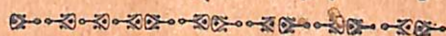
ज्ञानी सो उसे सन्यासी
कहते हैं। हे अर्जुन ! मेरे
चरण कमल में आकर मेरी
भक्ति बिना और किसी
वस्तु की कामना ना करना
ऐसा जो चतुर विलक्षण
मनुष्य है सो ज्ञानी कहाता
है यह तो हम ने अपने मत



का संन्यास और त्याग कहा
है अब अर्जुन जैसा शास्त्रों
का मत है सुन। एक शास्त्र
तो यह कहते हैं ज्यों बुरे
कर्म त्यागिये त्यों भले कर्म
भी त्यागिये। क्यों भले
कर्म का फल सुख और बुरे
कर्म का फल दुःख भोगना



है। भला कर्म कंचन जो
है सोना तिस की बेड़ी
चरणों में है। बुरा कर्म
लोहा तिस लोहे की चरणों
में बेड़ी है। इसी से भले
बुरे कर्म दोनों बंधन के
दाता हैं। इस लिये इनका
त्याग करना योग्य है। हे



अर्जुन एक शास्त्र यह कहता
है जो यज्ञदान तपस्या स्नान
इन से आदि सत्य कर्म
नहीं त्यागने। यह पवित्र-
ता के दाता हैं यह कर्म
करने से देह पवित्र होती
है। हे भारत बंशी अर्जुन
अब निश्चय कर मेरे मत



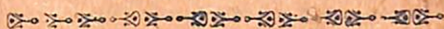
का त्याग सुन ! त्याग तीन प्रकार का है। प्रथम तो मेरा मत यह है, यज्ञ दान तपस्या स्नान यह मनुष्यों को पवित्र करते हैं। विवेकी पुरुष इनको त्याग नहीं करते, जो भले विवेकी पुरुष हैं, यह सत्य कर्म करने तिन



को भले हैं। भले कर्म कर के तिनका फल कुछ वांछते नहीं इसी कारण से मेरे मत में यह बात भली है। सब बातों में श्रेष्ठ है जो सत्य कर्म कर फल की वांछा न करे, यह बात अति भलि है। और जो अज्ञान से



आलस्य करे सत्य कर्म त्या-
ग कर जो स्नान न करे उसे
क्या फल होता है। जो
प्राणी माया का मोहया हुआ
सत्य कर्म त्यागे सो यह
तामसी त्याग कहाता है।
जो प्राणी देह के दुःख से
डर के सत्य कर्म त्यागे जो



स्नान करने से मुझे शीत
लगता है, हाथ दुःखते हैं,
इस प्रकार का त्याग राजसी
कहाता है इस का फल नहीं
पाते। हे अर्जुन! जो इस
प्रकार सत्य कर्मों को करता
है, प्रथम तो कहे जो मेरा
क्षत्रिय ब्राह्मण का जनम

दुर्लभ है। स्नान आदि
कर्म करने मुझ को भले हैं।
और फल की कुछ वांछा
नहीं करे, ऐसा सात्विकी
त्याग कहाता है। हे अर्जुन
विवेकी पुरुष स्नान आदि
सत्य कर्मों की निन्दा भी
नहीं करते और आप इन

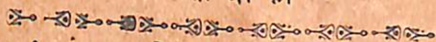
सत्य कर्मों का त्याग नहीं
करते परन्तु निश्चय से इन्हें
करते हैं फल की वांछा
नहीं करते। हे अर्जुन ऐसे
प्राणियों की बुद्धि निर्मल
होती है, तिस निर्मल बुद्धि
से ज्ञान उपजता है जब
मेरी महिमा कर ज्ञान उपजे

तब संसार के बन्धन से मुक्त होता है। इस से हे अर्जुन! सत्य कर्मों का त्याग न करे, जैसे सीढ़ियों के मार्ग से मन्दिर के ऊपर जा चढ़ता है। यह सत्य कर्म करना मुक्ति की सीढ़ी है, और किसी देहधारी

की शक्ति नहीं, जो सत्य कर्म त्यागे, हे अर्जुन जब पिताके वीर्य से माता के उदर में यह जीव आता है उसी दिन से लेकर मरने के दिन तक कभी वह निष्कर्मी नहीं है और न यह जीव त्यागी होता है। हे अर्जुन

यह जीव कब निष्कर्मी होता है सो सुन। तत्व कर्म प्राणी मुझ को समर्प, कुछ फल न मांगे तब यह जीव निष्कर्मी और त्यागी होता है। अब जो मनुष्यों को नित्य ही अपने कर्म करने का तीन प्रकार का फल है सो

भले कर्म का फल सुख बुरे कर्म का फल दुःख और जो भले बुरे कर्म को रला मिला कर करे सो सुख दुःख मिश्रित होता है यह तीन प्रकार के फल हैं जो नित्य संसारी मनुष्यों को होते हैं, पर किन को ? जो



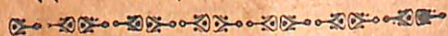
संसार को त्याग कर मेरी शरण नहीं आए तिनको और जो प्राणी मेरे चरण कमलों की शरण आए उन के निकट कोई दुःख नहीं आता। अब अर्जुन और सुन। जितने कर्म देहधारी मनुष्यों से होते हैं, भले



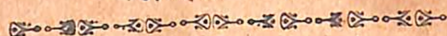
व बुरे सो सब देह इन्द्रियों से होते हैं। आत्मा कैसा है? अकर्ता है। कुछ नहीं करता केवल एक ही है। निर्मल का निर्मल है। हे हे अर्जुन! तिस को तुम ने पहचाना है जिस की निर्मल बुद्धि है सो तिस आत्मा

को पहचानते हैं, और दुर्ग-
ति जो अंध मति पुरुष हैं
सो आत्मा को नहीं देख
सकते । हे अर्जुन जिस
को अहं बुद्धि नहीं कि मैं
जो आत्मा हुं अकर्त्ता हुं
कुछ नहीं करता । जो कुछ
भला बुरा कर्म होता है देह

इन्द्रियों मन से होता है
जिसकी ऐसी बुद्धि है सो
वह सब लोगों को मारे
तो भी उस को कोई दोष
नहीं किसी कर्म का उसको
बंधन नहीं अब अर्जुन तीन
प्रकार का ज्ञान तीन प्रकार
का कर्म और कर्त्ता भिन्न २



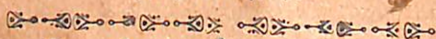
सुन । पहिले सात्विक ज्ञान
सुन । जिस ज्ञान से सब
भूत प्राणियों में उसको
एक ही अविनाशी आत्मा
दृष्टि आया है जिस को
व्यापक जान कर सब के
साथ एक सा ही वरते दुःख
किसी को ना देवे सुखदाई



बने यह सात्विक ज्ञान क-
हाता है और जब ज्ञान
भिन्न २ दृष्टि हुआ जो यह
और है और मैं और हुं
यह तेरा, यह मेरा है ।
भिन्न २ दृष्टि हुआ सो रा-
जसी ज्ञान कहाता है और
जिस ज्ञान से सब कोई

बुरी दृष्टि आवे और सब के
साथ वैर वांधा रहे सो ऐसा
तामसी ज्ञान कहाता है।
अब अर्जुन कर्म सुन जो
इस प्रकार कर्म करे जो
यह कर्म करना मुझ को
योग्य है फल की कुछ वांछा
नहीं यह सात्विक कर्म क-

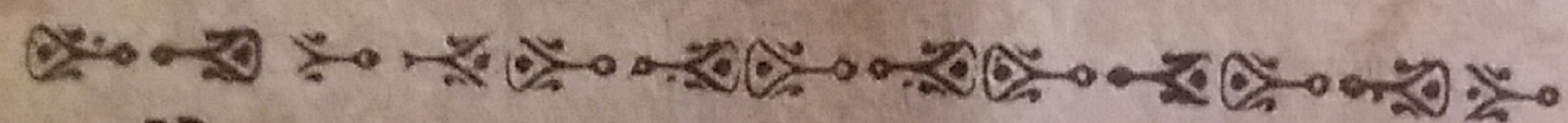
होता है। जिस कर्म के
करने से फल की वांछा है
और अहंकार के साथ कहे
कि यह कर्म मैं करता हूं,
और जिस कर्म किये से
जंजाल बहुत होये सो ऐसा
कर्म राजसी कहाता है जिस
कर्म में बंधन बांधना किसी



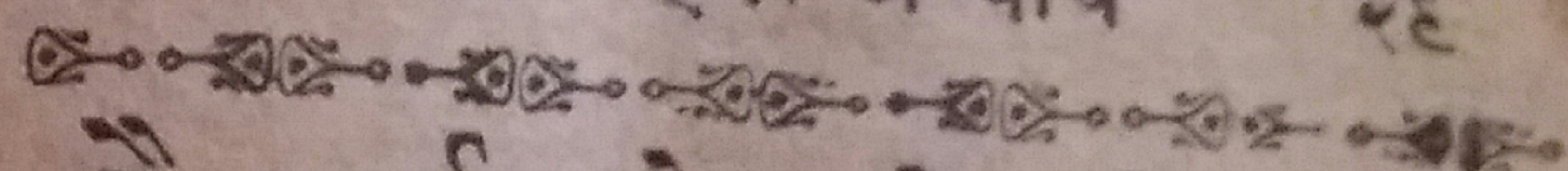
जीव को दुखाना किसीका
घात करना और ऐसा कर्म
करने से अपना बल और
बड़ाई दिखाना इस प्रका-
र माया का मोहिया कर्म
को आरम्भ करे सो तामसी
कहावे है अब कर्म कर्ता
सुन, अब इस प्रकार कर्म



करे, यज्ञ महोत्सव, होम
श्राद्ध व्याह इत्यादि और
जो सत्य कर्म है तिनको
करे फल कुछ वांछे नहीं
अहंकार से रहित कि मेरा
कुछ नहीं सब कुछ परमेश्वर
का है और उद्यम रहित
जो कुछ सहज हो सो हो



और यह भी नहीं जो अ-
मुक कार्य मेरा सम्पूर्ण हो
तब मेरा सन्तोष हो जो
कुछ कार्य बिगड़े तो कलपे
नहीं जो कुछ कार्य सम्पूर्ण
हो तो प्रसन न हो बैठे।
वह क्या समझे मेरा कुछ
नहीं सब कुछ ईश्वर का



है। हर्ष शोक से रहित हो
जो कुछ ईश्वर इच्छा से
आय मिले सो भोजन करे।
इस प्रकार सात्विक कर्ता
कहावे अब राजसी कर्त्ता
सुन जीवों के दुःखाने में
तिस का स्वभाव, और अ-
पवित्रता, हर्ष शोक कर



संयुक्त जो यज्ञ किये तिन के फल पाने की कामना मन में कि लोग मुझको धन्य कहेंगे। इस निमित हर्ष होना गृह से जो द्रव्य व्यय होता है इस कारण से शोक हो यह राजसी कर्त्ता कहावे है। अब ता-



मसी कर्त्ता सुन शास्त्र की विधिको समझे नहीं यह महोत्सव किस विधि कीजे किसी को मस्तक निवावे नहीं महामूढ़ मूर्ख आलसी विषादी सब किसीके साथ लड़ाई करे और ढिलर यह तामसी कर्त्ता है। अब हे



अर्जुन तीन प्रकार की बुद्धि
सुन। तीन प्रकार की दृढ़ता
भिन्न २ सुन जिस बुद्धि से
गृहस्थ में भी सुखी रहे।
भले कार्य को भला जाने,
बुरे कार्य को बुरा जाने और
यह भी समझे इस बात से
मुझ को मुक्ति तथा इस से



बन्धन है जिस बुद्धि से यह
बात समझे सो सात्विक
बुद्धि है और जिस बुद्धि से
धर्म को अधर्म जाने बुरे
को भला जाने और की
और समझे यह राजसी
बुद्धि के लक्षण कहिये जिस
बुद्धि कर धर्म को अधर्म

जाने कौन अधर्म जीव घात
करने से पुण्य जान कर यह
बकरा मैं मारता हूँ पुण्य
होगा इत्यादि और बातें
समझे ऐसे धर्म को अधर्म
उलटे समझे तो तामसी
बुद्धि कहावे है अब दृढ़ता
सुन मन किसी विकार को न

चीतवे और इन्द्रियां सब वश में
होवें। केवल एक प्रभु की
शरण जब। यह वार्त्ता हो
तब सात्विक दृढ़ता जान।
और जब मन अपने धर्म
में सर्व प्रकार दृढ़ द्रव्य के
कमाने में दृढ़ खाने पहरने
में दृढ़ता हो तब राजसी

दृढ़ता तू जान। और जब महाघोर निद्रा में सो रहे और परम चिन्ता में मग्न और किसी से कलाह विषाद यह तीनों लक्षण तामसी दृढ़ता के हैं। अब ऐसी दुर्बुद्धि से रंगे हैं निद्रा कहल चिन्ता यह तीनों

विकारों से आप को मुक्त नहीं कर सकते तिन की तामसी दृढ़ता जान हे भारत वंशी अर्जुन अब तीन प्रकार का सुख सुन जो मुख कड़वा खावे नहीं मिष्ट सुख दायक अमृत तुल्य भोजन करे प्रथम तप कष्ट

साध कर तब राज्य स्वर्ग
फल पावे यह सात्विकी सुख
कहावे है। अब राजसी सु-
ख सुन इान्द्रयों का अधि-
कार प्रथम सुख को पाकर
पीछे विष फल खाए यह
राजसी कहाये है तुच्छ फल
यह चारों। अब तामसी

सुख सुन प्रथम बेसुरत
निद्रा में आलस्य असाव-
धानता प्रभु का विसारना
एक कुशल घृतके मंथन में
सम से निपट शङ्का अब
अर्जुन और सुन। स्वर्ग से
ले कर पृथ्वी तले पाताल
लोक नाग लोक तक तीनों



लोक माया से उपजे हैं। इन तीनों लोकों में माया के तीन गुण बरते हैं। इन तीन ही गुणों के स्वभाव में लोग वर्तते हैं लोकों में गुण हैं गुणों में विषय लोक हैं। इसी कारण त्रिगुण मई सृष्टि कही है। अर्जुन अब



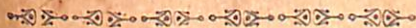
ब्राह्मण चत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों के स्वभाव की प्रकृया सुन। स्वभाव की प्रकृया कहिये जो साथ ही ले जन्मिये। प्रथम ब्राह्मण के स्वभाव की प्रकृया कहते हैं, इन्द्रियों को जीतना, मन जीतना, तप करना, भजन

पवित्रता, क्षमा, कोमल स्वभाव, ज्ञान अपना और विज्ञान परमेश्वर का यह जानना और गोविन्द में तत्व बुद्धि जो परमेश्वर है। यह ब्राह्मण स्वभाव के धर्म कहे हैं। अब क्षत्रिय के स्वभाव के धर्म सुन शूर

तेजस्वी, राजा, युद्ध से भागे नहीं बुद्धि मान कुछ दानी आप को ईश्वर, ठाकुर, महन्त, न जानना। परमेश्वर ईश्वर श्रद्धा यह क्षत्रिय के स्वभाव के लक्षण कहे। अब वैश्य के स्वभाव के धर्म सुन। खेती करना ब-



न्ज व्यापार, गौओं की सेवा
यह वैश्य स्वभाव के धर्म
हैं। अब शूद्र के सुनो।
तीनों ही वर्णों की सेवा क-
रनी जो प्राप्त हो तिस से
सन्तोष यह शूद्र स्वभाव के
धर्म हैं। यह चारों वर्णों के
स्वभाव के जो प्राणी इन



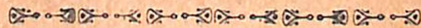
अपने २ कर्मों के करने से
स्वभाविक ही भली सिद्धि
को पाते हैं। अपने २ कर्मों
में दृढ़ हुँए से जो फल उप-
जे। सो कया कहिये पारब्रह्म
सारी सृष्टि का जो कर्त्ता
सबों में रमा हुआ अवनाशी
तिस को प्राप्त होवेगा।

हे अर्जुन यह चारों वर्णों के
जो धर्म कहे हैं इन में सब
को अपने अपने धर्म ने
कल कनरायण है अपना
धर्म तुच्छ देखे दूसरा धर्म
बड़ा देखे तब भी अपने धर्म
ने इस को कल्याण देनी
ह पराया धर्म इस की स-

हायता न करेगा अपने २
धर्म करने से पाप नहीं।
अपना धर्म मुक्ती का दाता
है यह चारों वर्णों के धर्म
कहे हैं। अब तीनों के ल-
च्चण सुन हे अर्जुन मेरा
भजन करने से चारों अवगु-
ण काटे जाते हैं सहज पद



को प्राप्त होता है इस को चौथा पद कहते हैं जिस को सहज पद तुरिया पद और सतपद भी इसी को कहते हैं जो प्राणी इस पद को प्राप्त होते हैं उनको किसी कर्म के त्यागने का दुःख नहीं। और जो सत्य पद



को पाकर किसी कर्म का आरम्भ कर तिस का दृष्टा-न्त सुन जैसे धूएँ से रहित निर्मल अग्नि जलती है तिस निर्मल अग्नि में धुएँ वाली लकड़ी डाल दें तब वह निर्मल अग्नि को बि-गाड़ देती है तैसे ही चौथे



पद वाले को कर्म आरम्भ भी करना दोष है। कर्म को आरम्भ करना सत्य पद को बिगाड़ देता है इस कारण जो तुरिया पद में लीन हुआ है। तिस की कामना को आरम्भ करना कुछ नहीं रहा। अब जो

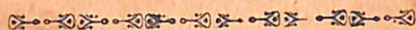


प्राणी चौथे पद में लीन हुआ है तिसके लच्चण सुन मुख्य लच्चण तो किसी साथ मोह ममता नहीं संसार के विषयों से अपना मन जीत रखा है। किसी वस्तु की इच्छा नहीं, कोई कामना नहीं? सुन। वह

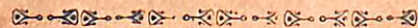
निष्कर्मी सिद्ध जो है संसार
का माथा जो सन्यास के
माथे में जा प्राप्त हुआ है
तिस सुख के समान और
कोई सुख नहीं इसी कारण
से तिसको कोई वांछा नहीं,
सो वह किस सिद्धि को प्रा-
प्त हुआ है। हे कुन्तीनन्दन

अर्जुन ! वह मेरे जानने के
ज्ञान को पूर्णतया प्राप्त हुआ
है। तिस की बुद्धि निर्मल
हुई और महेश्वर पारब्रह्म
विषे तिस का दृढ़ निश्चय
हुआ है और संसारी लोगों
की बात नहीं सुनता और
न आप किसी से बात

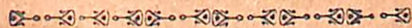
करता है। न किसी साथ से
प्रीति न शत्रुता है एकांत
वासी, मेरे स्मरण के सुख
को पाकर पूर्ण होरहा संसार
में जिस ने तीन ही बातें
जीत रखी हैं कौन तीन
बात सो सुन देहकर संसारी
मनुष्यों का संग नहीं कर-



ता जिव्हा कर बात नहीं
करता मन कर संसारी लोगों
की चिन्ता नहीं इस प्रकार
मन, देह, मनसा जिव्हा
यह जीत रखी है और
नित्य निरंतर मेरे ध्यान
साथ जुड़ा हुआ है। सारे
संसार से वैराग्यवान है।



कैसा वैरागी ऊपर ब्रह्मके
लोकतले शेषनाग के लोक
तिक के जो परम सुख हैं
तिनको तृण समान जाने
है। इस का नाम वैराग्य
है। फिर कैसा अहङ्कार,
बल, गर्व, काम क्रोध इन
का त्यागी इन में रमता



नहीं और भोजन छादन से
कुछ अधिक रखता नहीं
इस का नाम त्याग है जि-
न छेही बिकार त्यागे और
किसी वस्तु साथ ममता
मोह नहीं जो अमुक वस्तु
मेरी है, ऐसे जो सत्य पुरुष
है सो जीता हुआ देह साथ

होने से भी मुक्त है फिर
वह कैसा हुआ ब्रह्मभूत
क्या कहिये माया के तीन
गुण सो काटे गए। जब
तीन गुण काटे तब जैसा
आत्मा ब्रह्म था तैसा ब्रह्म
का ब्रह्म ही इस कारण से
तिस को ब्रह्म भूत ही

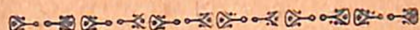
कहिये। जब ब्रह्म भूत
हुआ तब तिसका आत्मा
परम प्रसन्न हुआ तब कुछ
गई वस्तु की चिन्ता न
करे। अनहोई वस्तु के आने
की वांछा न करे सब भूत
प्राणियों के साथ समता
दृष्टि यह लक्षण तुरियापद

के सुभ हैं जब तुरियापद
में मनुष्य आवे है तब मेरी
भक्ति को तुरन्त ही पावे
है। मेरी भक्ति यह है जो
मेरी महिमा का प्रताप जा-
नना सो मेरा भक्त कैसा
है तुरिया पद में लीन हुआ
क्या ब्रह्म ज्ञान का प्रकाश

हुआ सो भक्त प्रभुको जाने
प्रताप प्रभुका सकल जाने
बड़ाई महत्वता की ब्रह्म
विधि विचार इसको जाने
आगे और महात्म्य नहीं
तिस महिमा का जाननाही
परम भक्ति है। एक क्षण २
पल २ राम नाम को सि-



मरो। हे अर्जुन जिन मेरी महिमाके ज्ञानरूप अमृत का पान किया सो जब लग मनुष्य देह में बसे, तब लग परम शांति सुख तिस में मग्न हैं। जब देह त्यागे तब भी मेरे परम निध अविनाशी-पद में जा



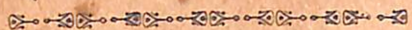
लीन होता है। यह चौथे पद तुरिया शांति पद के लच्छण कहे, जिस को मेरे भजन रूप अमृत का स्वाद आया है और साथ ही माया प्रकृति करे है, सो मेरी कृपा ते मेरे परम पद को प्राप्त होता है। इसी

कारण से हे अर्जुन ! तू
मन का निश्चल चेता मेरे
में राख मुझ साथ ही प्री-
ति कर बुद्धि का निश्चल
चेता मेरे में रखने से संसार
के दुःखों से तर जावेगा।
और जो अपने अहङ्कार के
लिये मेरी आज्ञा न मानेगा,

तब तेरा विनाश हो जायेगा।
जो तू अहङ्कार के लिये
कहे जो मैं युद्ध नहीं करता
सो तेरा कहना झूठ है
क्योंकि जैसी तेरी प्रकृति
है तैसा तुझसे हो रहा है।
हे कुन्ती नन्दन अर्जुन !
जैसे २ स्वभाव के देहधारी

उपजे हैं सो सब स्वभाव
बन्धन से बंधे हुए हैं सब
लोग स्वभाव के वश हैं
स्वभाव किसी के वश नहीं।
जो तू कुटुम्ब का मोहया
कहे जो युद्ध नहीं करता
तो क्षत्रिय का स्वभाव तुझ
से अवश्य युद्ध करावेगा।

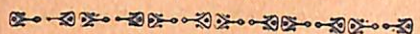
हे अर्जुन! एक ईश्वर का
स्वरूप भूत प्राणियों में बसे
है। सो अवश्य कर जीवों
को माया मोह के यन्त्र पर
ही बैठा कर सब को भ्रमाता
है। तिस कारण सब भावों
कर तू ईश्वर की शरण जा
परम शांति जो कल्याण



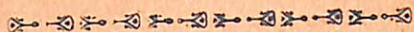
पुरातनस्थानता को प्राप्त होवेगा । हे अर्जुन ! वह गुह्य से गुह्य परम गुह्य ज्ञान मैंने तेरे प्रति कहा है, और जितने मार्ग मेरे पाने के हैं सो सब तेरे प्रति कहे हैं । हे अर्जुन ! सारी गीता में से यह गुह्य बचन है सो



तु मेरा परम मित्र है तेरी मति बुद्धि मेरे चरणों के साथ दृढ़ है । इस कारण से तेरे कल्याण निमित मैं कहता हूं । हे अर्जुन ! सब भजनों में मुझ को यह भजन रुचे है । जब इस भजन में दृढ़ होगा, तब



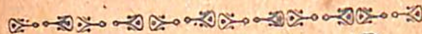
सब भक्तों से मुझे प्यारा
लगेगा। सब भजनों को त्याग
कर मेरी शरण आ सो मैं
तुमको सब पाप से मुक्त
करूंगा तू चिन्ता मत कर।
हे अर्जुन! यह ज्ञान जो
मैंने तुझ को कहा है सो
तू ऐसे लोगों को नहीं सु-



नाना जो मेरी भक्ति से
विमुख हैं। जिस को सुनने
की श्रद्धा न हो और जो
मेरा गुह्य ज्ञान मेरे भक्त
को सुनावेगा तिस पुरुष ने
मेरी भक्ति की है। ऐसा
कोई दूसरा पुरुष मेरे प्रस-
न्न करने को नहीं है ऐसा



प्राणी ना पीछे कोई हुआ और न आगे होगा, वह मुझ को अति प्यारा है, जिस ने मेरे भक्त को गीता का ज्ञान श्रवण कराया है, उस को बहुत फल प्राप्त होगा और जो कोई इस गीता जी के एक श्लोक



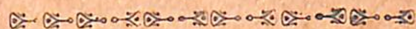
का भी पाठ करेगा तिस का फल सुन। सर्व यज्ञों में श्रेष्ठ जो ज्ञान यज्ञ है तिस का फल देता हूं, और तिस पाठ कर्ता के निकट जा खड़ा होता हूं। जैसे कोई किसी का नाम ले कर बु-लाये तब वह तत् काल

बोलता है तैसे ही गीता के
पाठ करने हारे के निकट
में जा खड़ा होता हूँ और
जो अर्थ कर सुनावे तिसकी
महिमा बड़ाई कुछ कही
नहीं जाती, जैसे मेरी म-
हिमा और बड़ाई वचनों से
अगोचर है तैसे गीता के

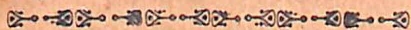
अर्थ करने हारे की महिमा
बचनों से अगोचर है और
सुनने हारा इसको सत्य २
मान कर श्रवन करे वह
भी जनम मरण के बंधनों
से मुक्त हो कर परमानन्द
अविनाशी पद को पावेगा
इससे अर्जुन यह ज्ञान तैने



एकाग्र चित हो कर श्रवण
किया है सो तेरे विषे जो
अज्ञान, मोह था सो नाश
हुआ। श्री कृष्ण जी के
वचन सुन कर अर्जुन बोला,
हे अच्युत! अविनाशी पुरुष
जी! हे भगवान् तुम्हारी
कृपा से मेरे मोह का नाश

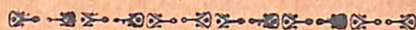


हुआ और ज्ञान भी पाया
मेरी बुद्धि भी निर्मल हुई
मेरे मन के जो सन्देह थे
तिन का भी नाश हुआ
और आप के मुख कमल
से युद्ध करने की आज्ञा
हुई है, सो मैं युद्ध करता
हूं।



सञ्जय उवाच

सञ्जय राजा धृतराष्ट्र से कहता है । हे राजन् ! वासुदेव श्री कृष्ण भगवान जी और पार्थ अर्जुन उन दोनों का सँवाद गोष्ठ गीता का महात्म्य सुन समझ कर मेरे रोम खड़े हो गये ।



जो व्यास जी ने मुझे दिव्य दृष्टि दी है सो तिनकी कृपा से यह ज्ञान गोष्ठि मैं ने सुना है ॥ सो यह गुह्य से भी गुह्य है ॥ ईश्वर के ईश्वर श्रीकृष्ण भगवान् और अर्जुन तिनके मुख कमल से जो ज्ञान निकला है

तिस को विचार कर परम
हर्ष को प्राप्त हुआ हूं और
विश्व रूप जो श्रीभगवन्
जी ने अर्जुन को दिखाया
है, तिस को विचार २ कर
परम हर्ष और विस्मय को
प्राप्त हुआ हूं । हे राजन् !
मेरे निश्चय की बात सुन

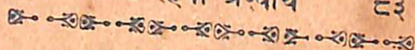
जिस ओर योगीश्वरों के
ईश्वर श्रीकृष्ण जी और
गांडीव धनुष धारी अर्जुन
हैं सो तिस ओर लक्ष्मी है,
तिसही की जय होगी मेरी
मति यही है तू यही निश्च-
य कर जान जिन के पक्ष
पर श्रीकृष्ण जी हैं सो ऐसे



परम भाग्यवान पाण्डवों की जय होगी। पाण्डव जीतेंगे, और तेरे अधर्मी पुत्र हारेंगे यह जान।

इति श्रीभगवत गीता सुब्रह्म विद्या योग शास्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन संवादे सब शास्त्र निर्णय मोक्ष योगो नाम अष्टादशो अध्याय. ॥





अथ अठारहवें अध्याय का

महात्म्य

श्रीनारयणोवाच

हे लक्ष्मी ! अठारहवें अध्याय का महात्म्य सुन। जैसे सब नदियों में गङ्गाजी श्रेष्ठ हैं। देवताओं में हरि श्रेष्ठ हैं, सब तीर्थों में पुष्करराज श्रेष्ठ है। सब पर्वतों में कैलाश पर्वत श्रेष्ठ है, सब ऋषियों में नारद श्रेष्ठ है सब गऊओं में

कपिला कामधेनु गौ श्रेष्ठ है। तैसे
सब अध्यायों में गीता का अठा-
रहवां अध्याय श्रेष्ठ है। तिस का
फल सुन। सुमेर पर्वत पर देवता
लोक में इन्द्र अपनी सभा लगाए
बैठा था, उर्वशी नृत्य करती थी
बड़ी प्रसन्नता में बैठे थे, इतने में
एक चतुरभुज रूप धारे को पारि-
षद लाये इन्द्र को सब देवताओं
के सामने कहा-तू उठ इस को

बैठने दे। यह सुन कर इन्द्र ने
प्रणाम किया, उस तेजस्वी को
बैठा दिया। इन्द्र ने अपने गुरु बृह-
स्पति से पूछा। हे गुरु जी! तुम
त्रिकालदर्शी हो देखो इसने कौन
पुण्य किया है जिससे यह इन्द्रा-
सन का अधिकारी हुआ, मेरे
जानने में इन्होंने कोई पुण्य,
तालाब व्रत, यज्ञ, दान कुछ नहीं
किया। विश्वेश्वर ठाकुर, मन्दिर

नहीं बनाया, तालाब और कूप नहीं लगाया, किसी को अभय-दान नहीं दिया, बृहस्पति, जी ने कहा, चलो नारायण जी से पूछें तब राजा इन्द्र बृहस्पति, ब्रह्मा-दिक सब देवता श्रीनारायण जी के पास जा कर दँडवत कर प्रार्थना पूर्वक कहा, हे स्वामिन्! दास सहायक भक्त रक्षक आप के चार पारषद एक चतुरभुज तेजस्वी

स्वरूप को लाकर मुझ को इन्द्रा-सन से उठा उस को बैठा दिया है मैं नहीं जानता उस ने कौन पुण्य किया है, मैंने कई अश्वमेध यज्ञ किये हैं तब मुझे इन्द्रासन का अधिकारी आपने किया है, इस ने एक यज्ञ भी नहीं किया यह मुझे बड़ा आश्चर्य है, तब श्रीना-रायण जी ने कहा, हे राजे-न्द्र! तू मत डर, अपना राज्य

कर इस ने गुह्य उत्तम पुण्य किया है इस का नियम था कि नित्य प्रति स्नान कर श्री गीता जी के १८ वें अध्याय का पाठ किया करता था, इस के मन में भोगों की तृष्णा रहीं थी, जब इस ने देह छोड़ी तब मैंने आज्ञा करी हे पारपदो ! तुम इसको पहले जाकर इन्द्र लोक भोगाओ जब इस का मनोर्थ पूरा होय तो मेरी सायुज्य

मुक्ति को पहुँचाओ तुम जा कर भोगोंकी सामग्री इकट्ठी कर दो तब इन्द्र और सब देवताओं ने आकर सब वस्तु भोगों की एकत्र कर दीनी और कहा इन्द्र लोक के सुखों को भोगो । कुछ काल इन्द्रपुरी के सुख भोग कर फिर श्रीभगवान की कृपा से सायुज्य मुक्ति देकर बैकुण्ठ का अधिकारी किया श्रीनारायण जी कहे हैं ।

हे लक्ष्मी ! शिवजी कहे हे पार्वती यह अठारहवें अध्याय का महात्म्य है गङ्गा, गीता गायत्री यह कलियुग में तीनों मुक्ति की दात्री हैं ॥ इति श्री पदमपुराणे सती ईश्वरे सम्बादे उत्राखंडे गीता महात्म्यो नाम अष्टादशोध्यायः ॥१८॥

श्रीभगवानुवाच

श्रीनारायणजी कहे हैं जो ब्राह्मण साधू, वैष्णव, योगी अठारहवें

अध्याय का पाठ करते हैं तिनको मैं कई अश्व मेध किये का फल देता हूँ कई कपला गौदान किये का असंख्य चान्द्रायण व्रत किये का और भी बड़े२ दान पुण्य का फल देता हूँ, जो प्राणी नित्य प्रति श्रीगीता जी का पाठ करते हैं वा प्रीति के साथ सुनते हैं हे लक्ष्मी जी जो पवित्र ठौर में बैठ कर पढ़ते हैं सुनते हैं, और हरिद्वार की



पौड़ियों पर, गँगा जी के किनारे पर तुलसी वा पीपल के पास बैठकर, हरि मन्दिर और जहां जहां उत्तम ठौर हैं तहां बैठकर पढ़ें तो उस प्राणी को कलियुग के जितने पाप हैं नहीं लगते और दुःख क्लेश आपदा से छूट जायगा। जो प्राणी यह चार साधन करे गँगा स्नान गीता गायत्री पाठ, सन्तों की सेवा, गोविंद का भजन



इनके प्रताप से कलियुग के पाप नहीं व्यापेंगे। इन २ पर्वों में गीता पाठ करे एकादशी अमावस्या पौर्णमाशी तो हजार गौदान किये का फल होवे, पित्रपक्ष में पाठ करे तो जितने पितर अधोगत गए हैं उन सबका उद्धार होगा, वैकुण्ठ वासी होकर आशीर्वाद करेंगे तिनकी मुक्ति होगी, जो प्राणी सारी गीता का पाठ

तो क्या कहना है एक अध्याय
या श्लोक नित्यपढ़े तो मुक्तिभुक्ति
सब मिलेगी जो श्रोताओं को
सुनावे तो गौ दान किये का फल
होगा इस जीव के उद्धार के छः
यतन हैं, गङ्गा स्नान, गीता पाठ
कपला गौ की सेवा, गायत्री पाठ
और तुलसी पीपल में जल सींचना
ज्ञानी सन्तों की सेवा करनीं,
एकादशी ब्रत। हे लक्ष्मी ! सर्व

शास्त्रमयी गीता सर्व धर्ममयो
दया। सर्व तीर्थ मयी गँगा सर्व
देवमयो हरिः ॥ अर्जुन सुनकर
कृतार्थ हुआ जो इसको पढ़े सुने
धारण करेगा सो कृतार्थ होवेगा
इसकी अपरम्पार महिमा है, कहने
सुनने से बाहर है मुक्ति भुक्ति की
दात्री है ॥१८॥

इति श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषद् सुब्रह्म
विद्या योगशास्त्रे अष्टादशोध्यायः ॥

महात्मा गांधी जी का भजन

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है, जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है। टुक नींद से अखियां खोल जरा, और अपने रब से ध्यान लगा। यह प्रीत करन की रीत नहीं रब जागत है तू सोवत है। जो कल करना हो अज करले, जो अज करना हो अब करले जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताए क्या होवत है। नादान भुगत करनी अपनी पापी पाप में चैन कहां जब पाप की गठड़ी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।

मुद्रक: दुर्गादास प्रेस अमृतसर

आरती गंगा जी की

ओम जय गंगे माता श्री जय गंगे माता जो नर तुमको ध्याता जो नर तुमको ध्याता मन वांछित फल पाता। ओम् जय गंगे माता॥१

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता, शरण पड़े जो तेरी शरण पड़े जो तेरी, सों नर तर जाता। ओम् जय गंगे माता॥२॥

पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता। कृपा दृष्टि तुम्हारी कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता। ओं जय गंगे माता ॥३॥ एक ही बार जो तेरी शरणांगति आता यम की त्रास मिटाकर, यम की त्रास मिटाकर, परम गति पाता ओं जय गंगे माता ॥४॥ आरती मात तुम्हारी जो मन जन नित गाता, दास वही सहज में अर्जुन वही

सहज में मुक्ति को पाता। ओं जय गंगे माता ॥५॥ इति श्री गंगा जी की आरती सम्पूर्णम्।

आरती शिवजी की

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धाङ्गी गौरां।टेक। एकानन चतुरानन पंचानन राजे। हंसासन गरुड़ासन वृषवा-हन साजे। जय० दो भुज चार

चतुर्भुज ते सो हैं। तीनों रूप नि-
रखता त्रिभुवन जन मोहै ॥जय०
अक्षयमाला वनमाल रुण्डमाला धारी
चन्दन मृगमद सोहै भाले शशिधारी
॥जय० श्वेताम्बर पीताम्बर वाग-
म्बर अंगे। सनकादिक ब्रह्मादिक
भूतादिक संगे ॥जय० कर में श्रेष्ट
कमण्डल चक्रत्रिशूल धरता। जग-
कर्त्ता जग हर्त्ता जगपालनकर्त्ता

॥जय०॥ चौसठ योगन मंगल गावें
निरत करत भैरों, बाजत ताल मृ-
दङ्गा और बाजत डमरू ॥जय०॥
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अ-
विवेका। प्रणवाक्षर के मध्ये यह
तीनों एका ॥जय०॥ त्रयगुण शिव-
की आरती जो कोई गावे। कहत
सदानन्द स्वामी मनवांछित फल
पावे ॥जय०॥

आरती जय जगदीश हरे

ओं जै जगदीश हरे स्वामी जै जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे ॥ ओं जै जगदीश हरे ॥ जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का, सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका ओं जै जगदीश हरे ॥ मात पिता तुम मेरे शरणपड़ूं किसकी, तुम विन और

न दूजा आश करूं जिसकी ओं जै जगदीश हरे ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी, पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥ ओं जै जगदीश हरे ॥ तुम करुणा के सागर तुम पालन करता, मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता । ओं जै जगदीश हरे ॥ तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति, किस

विघ मिलूं गोंसाईं तुम को मैं कु-
मति ॥ ओं जै जग दीश हरे ॥
दीन बन्धु दुःख हरता रक्षक तुम
मेरे, अपने हाथ उठाओ द्वार
पड़ा तेरे ॥ ओं जै जगदीश हरे,
विषय विकार मिटाओ पाप हरो
देवा श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की
सेवा ॥ ओं जै जगदीश हरे ॥

सुन्दर रामायण

उर्दू, हिन्दी, गुरुमुखी में

मिलने के पते:—

पं० [illegible]दास बुकसेलर हरिद्वा[illegible]

अर्जुनसिंह [illegible]जीतसिंह हरिद्वार

रुतेश्वरानन्द [illegible]सेलर हरिद्वार

हंसराज बुकसेलर [illegible]षिकेश

हरनामसिंह सोहनसिंह हरिद्वार

भारत पुस्तक [illegible]ण्डार,

कटड़ा आ[illegible]वाला, [illegible]